सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• देवेन्द्र सोनी

सृजक-सृजन-समीक्षा

देवेंन्द्र सोनी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स**, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत
"सृजक"
देवेंन्द्र सोनी का परिचय

नाम - देवेंन्द्र सोनी

माता का नाम - स्व.श्रीमती फूलवती सोनी

पिता का नाम - स्व. श्री माखन लाल सोनी

जन्मतिथि - 05 अक्टूबर 1960

जन्म स्थान - इटारसी (मध्य प्रदेश)

शिक्षा - स्नातक ,पत्रकारिता में डिप्लोमा

(1978 से युवा प्रवर्तक का प्रकाशन)

सामाजिक क्षेत्र - सामाजिक एवं राजनैतिक

विधा - लेखन सभी विधा में

ईमेल - youvapravertak@gmail.com

मो. - 09827624219

प्रकाशन - प्रमुख पत्र - पत्रिकाओं और वेब पोर्टल पर कहानी , लेख , पुस्तक समीक्षाएं एवं नई कविताओं का निरन्तर प्रकाशन ।

सम्मान। - साहित्यिक , सामाजिक एवं श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए अनेक बार सम्मानित।

अन्य उप्लब्धियाँ - सभी विधा में लेखन सम्पादन।

लेखन का उद्देश्य - सकारात्मक और प्रेरक

लेखन के प्रति विचार - सार्थक

सम्प्रति - प्रधान सम्पादक

सा.युवा प्रवर्तक, इटारसी (मध्य प्रदेश)

आत्मकथ्य

लेखन के साथ ही पत्रकारिता का लहू किशोरवय से ही रगों में दौड़ने लगा था । नाबालिग होने के कारण " युवा प्रवर्तक " का प्रकाशन 6 माह के लिए स्थगित करना पड़ा । अत्यंत पीड़ादायक समय रहा वह। मित्रों ने नाबालिग सम्पादक कहना शुरू कर दिया । एक मित्र ने तो इस पर एक पूरा लेख ही छाप दिया ।

खैर , 18 वें वर्ष के पहले ही दिन मैने युवा प्रवर्तक का चुनावी अंक प्रकाशित किया । इसके अलावा खण्डवा और इंदौर संस्करण भी निकाले । आज यह सब सोचकर अचंभित होता हूँ । इस जोशीली निर्भीक यात्रा में राजनैतिक आघातों के अलावा बहुत कुछ खोया-पाया और सीखा । श्रद्धये डॉ.राम कुमार वर्मा , महादेवी जी , पंडित रामनारायण उपाध्याय जी , शंकर पुणतांबेकर जी , श्रीकांत जोशी जी कैफ़ भोपाली जी , अजातशत्रु जी और अन्यान्य साहित्य साधकों के अलावा पत्रकारिता के पुरोधा - श्रीधर जी, मदन मोहन जोशी जी, दाऊ लाल साखी जी , एन.राजन जी , मायाराम सुरजन जी कमल दीक्षित जी , महेश शर्मा सर , कितने नाम लूँ जिन्होंने अपने आशीष और मार्गदर्शन से मुझे अभिसिंचित किया । इन सबके आशीर्वाद और प्रेरणा का ही यह प्रतिफल है कि वर्तमान दौर में भी लेखन के प्रति समर्पित हूँ ।

देवेंन्द्र सोनी, इटारसी

"सृजक का सृजन"

देखते रहते हैं राह ..

खिड़की के पास बैठकर
देखते हैं वे हमेशा ही
सूनी निगाहों से अपलक
उस ओर, जहां से -
बंधी है थोथी उम्मीद उनकी।

एक राह निकलती है -
जो जोड़ती है , उनके घर को।
दिखता है खिड़की से हर मंजर
जो उछलता - कूदता , चलता है
दिन - रात उस राह पर।

इसी राह से आशा है उन्हें
कि लौटा लायेगी जरूर
एक न एक दिन
विदेश गए अपने नाती - पोतों
और बेटा - बहू को ।

अरसा बीत गया है -देखे उन्हें
थक गई हैं आँखें
बाट जोहते -जोहते
खिड़की पर बैठकर ।

मन मसोस कर रह जाती है
बुढ़िया भी अब उनकी
झल्ला कर देती है ताना
खिड़की से तांका -झांकी करने का।
खुलकर दे नही सकती दिलासा
तो आरोप यही लगाती है।

छुप- छुप कर छुपा लेती है आंसू
एहसास नही होने देती है,
पर , दुनिया देखी जिस बुढ़ऊ ने
वो कैसे इससे अनजान रहे ?

आस बंधा कर एक - दूजे को
तकते रहते है, दोनों ही राह सदा ।
जीवन की भी तो हो गई है संध्या
देखो , सूरज भी तो अब अपने घर
चला।

आएंगे बच्चे भी घर अपने
सूरज के ढ़लते ही , पर
मन में है यह डर बसा-
मौन निशा के अंधकार में
देखेंगे फिर वे उन्हें कैसे भला ?

दर्द नही यह एक पिता का,
कई पिता हैं , ऐसे बेचारे
बच्चे ही समझें अब तो
रहें पास बनकर सहारे ।

धन -दौलत तो है चंचला
कभी न कभी मिल ही जायेगी।
छूट गया यदि साथ मात -पिता का
हो न सकेगी फिर इनकी भरपाई।

वक्त अभी भी है बच्चों ,
निर्णय तुमको करना है
वक्त यही फिर -फिर लौटेगा
जिससे तुम्हे भी गुजरना है।

एहसास

पक्षियों की चहचहाट से
एक एहसास
रोज होता है मुझे
सुबह उठते ही
घर की मुंडेर पर कुछ
दाना - पानी रखने का ।

होता है यह एहसास
इसलिए भी कि -
भोर होते ही
पक्षियों का कलरव
मुझे चेता जाता है .
अपने नन्हें बच्चों के साथ
चिंच्याते, गुटर - गुं करते।

मेरे ये मित्र
आते ही हैं मुंडेर पर मेरी
यह आशा लिए कि -
मिलेगा उन्हें जरूर यहां
भर पेट दाना - पानी ।

झरोखे से देखता हूँ मैं छुपकर
उनका रोमांचित कर देने वाला
कलरव ।
लड़ते-झगड़ते
फुर्र से यहां - वहां बैठते
एक दूजे से छीना - झपटी करते।

आंनदित हो जाता हूँ
जब देखता हूँ
चिड़िया को अपने
नन्हें की चोंच में
रखते हुए दाना .
मानता कहाँ है चिड़ा भी
रह -रह कर जताता है
प्यार अपना ।

यही दृश्य , यही एहसास
देता है सुकून
भर देता है मन में -
ऊर्जा, आत्मविश्वास
और देता है प्रेरणा ,
कि - रे मन तू
करता है क्यों चिंता
रखवाला है न !

हम सबका -
वह ईश्वर ।
उन बेजुबान पक्षियों की तरह
ही तू कर्म तो कर
निश्चित ही होगा
फलित भी वह ।

मोबाइल

जानते हैं हम सभी
मोबाइल का अर्थ -
फिर भी -चंचल ,अस्थिर, गतिशील,
भ्रमणकारी और हर कहीं होना
उपलब्ध
इसके विशेष गुण होते हैं ।

मोबाइल के बिना अब
अधूरा लगता है संसार ।
बेचैन हो जाते हैं हम जरा में
मोबाइल के इधर -उधर होते ही।

पर कहते हैं न - मिलता ही है
जैसी संगत वैसा फल ।
फायदे हैं यदि अनेक , मोबाइल के
तो बुरी है लत भी इसकी।

ज्यादातर हो रहा है
दुरूपयोग ही इसका
समाते जा रहे हैं हमारे अंदर
नामानुरूप गुण इसके।

बना दिया है मोबाइल ने हमको भी
अस्थिर, चंचल और लती होना।
बिगाड़ दी है इसने दिनचर्या हमारी
और छीन लिया है सोते -जागते
मन का चैन ।

ऐसा भी नहीं कि अवगुणी ही है यह
सुविधाएं भी देता है अनेक
अपने गुणों में भी परिपूर्ण है यह
बशर्ते करें हम इसका सदुपयोग।

नई सदी की क्रांति है मोबाइल
पर समझ लें हम
परिणामों को भी इसके
जरूरी है यह भी ।

अब भी

अब भी रक्खा है ,
जिव्हा पर वह स्वाद ,
जो था माँ और दादी - नानी के
हाथों में ।

कितने जतन और प्यार से
घट्टी में अपने हाथों से पीसकर गेहूं
बनाती थी आटा
गाते हुए कोई लोकगीत।
पिसता था सिलबट्टे पर अलसुबह
महकता मसाला और
फिर बनता था वह सुस्वादु भोजन
जो अब भी, भुलाये नहीं भूलता है।

याद है मुझे , जब
मिलकर अडोसन - पड़ोसन
बैठ जाती थीं दुपहरिया में
जाकर किसी के भी घर ,
और बन जाते थे, बातों ही बातों में
सिवइयां, बड़ी पापड़ ,आचार।
अब भी याद है मुझे

इनका प्रेम भरा वह स्वाद
जिसमें छिपा होता था
हंसने -हँसाने , मिल बाँट कर खाने
और सीखने - सिखाने का कुदरती
एहसास ।

पर अब निगल लिया है इसे
स्वारथ और आपाधापी की
अंधी होड़ ने ,
होकर बाजारबाद से ग्रसित।

इसीलिये नहीं देता उस जमाने की
कोई और बानगी , क्योंकि
बदल गया है समय और
बदल गए हैं हम ।
पर , फिर भी कोशिश तो करें
देने की अगली पीढ़ी को
जीवन के वे विविध स्थाई स्वाद
जो अंकित हैं मन मस्तिष्क में
अब भी हमारे।

हैं समान दोनों ही

कोई रिश्ता नहीं था
धरा पर उतरे थे जब
दो मानव
एक था आदम और
एक थी ईब ।
खाकर कोई फल
जागा था उनमे प्रेम
जिससे फलित होने लगी संतति।

अरण्य में घूमते -फिरते
कंद-मूल और जानवर खाकर
करते थे गुजारा , रहते थे मस्त
न था तब नारीवाद और
न ही था कोई पुरुष वाद।

आई जब दर्द की घड़ी ईब पर
मर्द ही बना सहारा
ले ली उसने जिम्मेदारी सारी
पति और पिता के रूप में।

जागा उसमें भी तभी -
सुरक्षा ,अधिकार, अपनत्व और
लालन-पालन का भाव ।
तब से अब तक कर रहा है
मर्द , निर्वहन इनका ,
पति , पिता और भाई बनकर।

स्त्री ने भी समझा था इसे -
मर्द की छत्र-छाया में ही है
उसकी सुरक्षा और कल्याण ।
बाँट लिये फिर समझ से अपनी
दोनों ने ही प्रकृतिजन्य काम ।

कम नही थे तब भी
और कम नही हैं अब भी
दोनो ही एक - दूजे से।

पर , फर्क बनाया जो प्रकृति ने-
समझना तो होगा ही उसे
चलना भी होगा अनुरूप उसी के
जो होकर तय पहले से आया है।

हैं बराबर दोनों ही ,
पर काम है अलग - अलग
मान लेंगे जिस दिन यह हम
मिट जाएगा व्याप्त भरम ।

होगा फिर खुशहाल जीवन
मिट जाएगा भेद-भाव ।
ना रहेगा नारीवाद और
ना बचेगा पुरुष वाद ।

करना होगा मिलकर ही यह
हम सबको ,बचाने अपना घर।
बचाने अपना हर रिश्ता ।

धरती के देवता

ये कैसा
दस्तूर है जमाने का
मिली जब अस्थाई शोहरत
तो वे उठते - उठते
अकड़ गये
पर उन्हें क्या हुआ
जो नही नबाते कभी
शीश अपना मंदिरों में भी
वे झुक - झुक कर रहे हैं
चरण वंदना इनकी ।

वाकया था यह एक
नेताजी के दरबार का ।
भीड़ से घिरे वे , सुन रहे थे
समस्याएं आगंतुकों की ।
हर आने वाला पहले झुकता था
फिर आस लिए कुछ कहता था।
कभी वे फड़कते तो कभी अकड़ते
बीच - बीच में दम्भीली मुस्कान
फेंक
कुछ सुन - सुना भी लेते।

जारी रहा यह सिलसिला
नेताजी के दरबार से उठने तक ।
कोई खुश हुआ तो कोई
मुंह लटकाए चला गया फिर ।

पर मुझे अचंभित देख
पास खड़ा मित्र मुस्कुराया और
धीरे से बोला , कान में
भाई, ये धरती के भगवान हैं ।
चरण वंदना करने से इनकी
कईयों की हो जाती है
झटपट मुराद पूरी तो कई
आश्वासन से ही हो जाते हैं खुश।

कहते भी हैं न ,
आशा पर टिका होता है आसमान।
मंदिर में टेकने से माथा ,
न तो मिलते हैं भगवान और
न ही मिलता कोई आश्वासन
मुराद भी नही होती जल्द पूरी ।

इसीलिये अब मंदिर में बिराजे
पत्थर के देवताओं से ज्यादा
पूजे जा रहे हैं ये कलयुगी भगवान
जिन्हें कहते हैं धरती के देवता।
यह सुन खत्म हुआ मेरा
असमंजस और अविभूत हुआ मैं,
देख इधर - उधर
झुकी हुई गर्दन से अपनी।

विज्ञान और मानव

प्रारंभ से ही सृष्टि के,
गहरा रिश्ता है
विज्ञान और मानव का ।

मानव के साथ ही आया था
सृष्टि में विज्ञान भी ।
धीरे - धीरे इसे जाना -पहचाना
मानव ने ,और किए नामकरण ।

आदिम युग में भी
पत्थरों को रगड़कर
प्रकट की जाती थी अग्नि
और मिटाई जाती थी क्षुधा।

बांधकर रस्सी दो नट में
सुनी जाती थी आवाज भी।

उदाहरण कई हैं -
जो बताते हैं प्रारम्भ से ही
विज्ञान से मानव का जीवंत सम्बंध।

वर्तमान में बदल गए हैं हम
और आधुनिक हो गया है विज्ञान
भी ।

मगर अब समझना होगा हम को
यह भी कि ,जितना जरूरी है
सुविधाभोगी जीवन के लिए विज्ञान
उतना ही अभिशाप भी है यह।

जरूरी है अंध विश्वासों से
निकलकर
विज्ञान से जुड़ना और
बैठाना सामंजस्य , उसी तरह
जिस तरह - कूलर ,
तीन अलग -अलग गुण धर्म से
मिलकर देता है हम को सुकून ।

मानव निर्मित कूलर,
यदि न समझे विज्ञान को तो
बिजली,पानी और लोहा मिलकर
बन जाए हमारी बर्बादी का कारण
वह जनता है सामंजस्य करना
मगर भूल गए हैं हम ।

कहना चाहता हूँ , सिर्फ इतना
विज्ञान और मानव का
सम्बंध अटूट है
टूटने न दें इसे
दुरूपयोग या अनदेखा करके।

बैठाएं इनसे तालमेल
जिंदगी को खुशहाल बनाने के लिए
क्योंकि , विज्ञान तभी तक है ,
जब तक है सृष्टि में मानव।

"सृजन की समीक्षा"

1.

इस एकल पोस्ट के लिए आदरणीया देवेंद्र सोनी जी को हार्दिक बधाई। इनकी रचनाएँ आज के हालात को बखूबी बयां करती हैं। एक तरफ जहां मोबाइल के गुण अवगुण पर प्रकाश डाला है, वहीं दूसरी तरफ 'मानव और विज्ञान' एवं 'हैं समान दोनों ही' के द्वारा रिश्तों की बनावट और स्त्री पुरुष के कार्यशैली में तथा मानव और विज्ञान में संतुलन बिठाने की पुरज़ोर वकालत की है। मुझे इनकी 'अब भी' कविता बेहद पसंद आई।बाज़ारवाद ने निगल लिया है वो अपनेपन का स्वाद फिर भी रचनाकार की यह कोशिश की बचा लिया जाए वो विविध स्वाद आने वाली पीढ़ी के लिए। बहुत ही सुंदर सार्थक रचनाओ को पटल पर रखने के लिये एडमिन्स का आभार।

आरती कुमारी

2.

सप्ताह के कवि के रूप में प्रस्तुत होने पर आदरणीय देवेंद्र सोनी जी को बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं
आप एक ज़रा हटके और निर्भीक व्यक्तित्व हैं, आपको बड़ी बड़ी हस्तियों का आशीर्वाद प्राप्त है। आपके सृजन को नमन करती हूं।
समीक्षा

1)- देखते रहते हैं राह

बेहद मार्मिक चित्रण है, दिल को छू गई है आपकी यह रचना✿

2)- एहसास

बेहद खूबसूरत रचना जो पक्षियों के चुग्गा चुगने के माध्यम से ईश्वर पर भरोसा करने की शिक्षा देती है।

3) - मोबाइल

मोबाइल के उपयोग से होने वाले लाभ हानि को दर्शाती सुंदर कविता।

4)- अब भी

बड़े बुजुर्गों की उपस्थिति से प्यार , अपनापन और सुख का एहसास देती बेहद खूबसूरत रचना❁

5)- हैं समान दोनों ही

नर और नारी एक दूसरे के पूरक हैं ना कि प्रतिद्वंद्वी, यही बतलाती हुई सुंदर रचना❁

6)- धरती के देवता

नीति और राजनेताओं पर सार्थक व्यंग्य, सार्थक रचना।

6)- विज्ञान और मानव

विज्ञान वरदान या अभिशाप पर संक्षिप्त विवरण कविता के माध्यम से, उम्दा रचना।

आपको आपकी साहित्य यात्रा के लिए बहुत बहुत शुभकामनाएं

पिंकी परुथी "अनामिका"

3.

देवेंद्र सोनी जी....साहित्यिक लेखन और पत्रकारिता का एक अनूठा संगम! पत्रकारिता की जोशीली निर्भीक यात्रा एवं राजनैतिक आघात...जीवन की उपलब्धियों में परिवर्तित हुए तो साहित्य साधकों और पत्रकारिता के पुरोधाओं के आशीष, मार्गदर्शन और प्रेरणा ने सतत मार्ग को प्रशस्त करने का अभूतपूर्व कार्य किया। तभी आज के आपाधापी से भरे वर्तमान समय में पूरी निष्ठा से लेखन और पत्रकारिता में सक्रिय हैं।

देवेंद्र जी की रचनाओं को निरंतर पढ़ने का सुयोग प्राप्त होता रहा है। लेखन की लगभग सभी विधाओं के लेखन में निरंतर सक्रिय हैं। 'जरा हट के ' की तर्ज पर लिखी रचनाएँ मुझे बहुत भाती हैं।

देखते रहते हैं राह.... में आज के लगभग हर दूसरे-तीसरे घर की इस स्थिति की अभिव्यक्ति है। विदेश गया बेटा जब वहीं बस जाता है तो

उसके आने की राह देखते बूढ़े माता-पिता किस तरह एक-दूसरे से अपना दुःख छिपाते हुए जिस दयनीय स्थिति से गुजरते हैं... इसका बहुत ही मार्मिक वर्णन है। अंतिम चार पंक्तियों में दिया संदेश नई पीढ़ी को समझना होगा।

अहसास.... फल की चिंता न करते हुए कर्मरत रहने की संदेश देती हुई, तो हैं समान दोनों....स्त्री-पुरुष की बराबरी करने की स्पर्धा को सार्थक रूप देते हुए अपने-अपने कामों को समझ कर घर और रिश्ते संभालने की समझ की बात करती है।

धरती के देवता..... एकदम सटीक और चिता व्यंग्य है तो विज्ञान और मानव.... जीवन में बर्बादी से बचने के लिए सामंजस्य करने की ओर संकेत करता है।

रचनाओं को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है जैसे कवि और पाठक के बीच सीधा संवाद स्थापित हो रहा है और एक सजीव चित्र आँखों के सम्मुख बनता चला चला जाता है जो इन रचनाओं की सबसे बड़ा गुण है।

हर रचना सार्थक संदेश देती पाठक को अपनी ओर खींचती प्रतीत होती है। आज के युग में ऐसे ही सार्थक संदेश देती रचनाओं की युवा पीढ़ी को आवश्यकता है। ऐसी सुंदर और यथार्थ परक रचनाओं की लिए देवेंद्र जी को **बधाई**।

देवेंद्र जी ऐसे महाविद्यालय के समान हैं जिनकी रचनाओं के संपर्क में आने पर पाठक ही नहीं, बल्कि रचनाकारों को भी कुछ न कुछ सीखने को अवश्य मिलता है।

इनकी लेखनी इसी तरह प्रवहमान रहे।

डा०भारती वर्मा बौड़ाई

4.

नाबालिग उम्र में पत्रकारिता के ख़्वाब को साकार कर लेना,
जिजीविषा एवम् लगन का परिचायक है ।।

इतने महान लोगों का सानिद्धय यकीनन चेतना में प्राण फूँक देता है ।।
तभी मैं भाई देवेन्द्र जी को धधकती चेतना का कवि कहता हूँ ।
जरा हटके सोच विचार की, एक नयी राह की निर्मिति है ।
लीक से हटकर
प्रतिपक्ष को देखने का संवेदनशील और यथार्थ नज़रिया

देखते रहते हैं राह :-आज के दौर की कड़वी हक़ीक़त है ।।
विडम्बना ही है हमारे आँगन के वृक्ष की शाखाएं दूसरों के घर में फलाच्छादित हो रही हैं ।।
एहसास :-मन की कोमलताओं का आख्यान है।।
कवि मन अभी अपने से कटा नही है ।
मोबाइल:- के बहाने संचार क्रांति के इस अद्भुत टूल को देखने परखने की क़वायद
ज्यादा दूर क्यूँ जाऊँ
मैं स्वयम् ही इसका जीवंत उदाहरण हूँ ।
नींद को दांव पर लगा जाने कैसी बाज़ी खेलता हूँ ??
आज के काम कल, कल के परसों पर ठेलता हूँ,
नही है वक़्त माँ बीवी बच्चों भाई बहन के लिए,
आँख खुलते ही दुनिया जहान में संदेसे मेलता हूँ ।
(मेलना मालवी भाषा का शब्द मतलब भेजना)
अब भी:-पल पल बदलती दुनिया में
कवि मन अकस्मात् स्मृति की उपत्यकाओं में चक्कर लगाकर,
कल और आज का सघन विश्लेषण कर,

बाज़ारवाद की अनिवार्यताओं पर आ टिकता है ।।
दुनिया का न्यूक्लियर हो जाना,
मैं, मेरी बीवी ,मेरे बच्चे
तो सब कुदरती एहसास तिरोहित हो ही जाना हैं शनैः शनैः ।

बाद/वाद

हैं समान दोनों ही:- स्त्री विमर्श की तमाम कवायदों पर एक प्रश्न चिन्ह खड़ा करती सशक्त रचना ।

कमी बेशी कोई नही बस
स्त्री पुरुष, एक दूसरे के पूरक सम्पूरक हैं ।।
ये नियति का रचा सच है ।

प्रकृति जन्य भेद कोई नकार भले ही ले,सच बदल नही जाते
बख़ूबी भाव उकेरती रचना
आदम और हव्वा/ एडम और ईव

धरती के देवता:_सियासत को आईना दिखाती मेरी मनपसन्द रचना है ।

ज़रा से भाव क्या दिए तुमको,
तुम तो ख़ुदा ही हो बैठे,
मेरी जगह से खड़े होकर देखना कि तुम कितने पानी में हो ।
विज्ञान और मानव पढ़कर बचपन में रटे निबन्ध विज्ञान:- अभिशाप या वरदान की याद आती है ।।
और आज ये तथ्य भी मुहरबन्द हुआ
साइंस गुड सर्वेंट बट bad मास्टर.
साधुवाद,..शुभ कामनायें,....जय हो विजय हो

ब्रजेश शर्मा विफल
झाँसी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com